[illegible]चे पुस्तक

श्रीगुरुदेवेनमः सदा मस्त
प्याला मुर्सेदूं पिलाया॥
उसि मस्त मो निस्ता मेवा
खिलाया॥ द्रिया दस्त पं
ज्या किया मेहर बानी॥
केहसी हअब धु लुटी
कर्मो की निशानी॥१॥
अन्हेहत नगारा पह
मेरा बज्यावे॥ अगम
के महलो जे बज्याति
बोगावे॥ जहा चंद्र सू

२ रोज रोजबिनाहउ
ज्याला॥ताहासिद्ध
अबधुतसदामत्तवा
ला॥श॥पलखमो
दिखाया॥नरान्तर
ध्याने॥वज्रदच्या
रसेपारकरीदिवा
ने॥सोहंज्यातसेज्या
तपाईहमेशा॥हुना
दुःखनागाकियादि २

लखबुलासा॥३॥पलख
सेअलखकीकिलिखा
लनाई॥अनुहल्कावाडी
जहासेलाजाई॥तहाब्र
ह्मकाब्रह्मपायाउज्या
ला॥ऊरूज्यानसेज्या
नबिज्यानजुला॥४॥
गुरुज्यानसोहंअज
पादियाई॥बिनाका
मिनीयोगमायासुना
ई॥जहाब्रह्मपावेदिया

बूझताला॥अनुहदजा
नोइसुनसेहलिला॥५॥जा
हारंगसुगरंसेरंगन्यारा॥
दिखावेनिलासिन्धुका
कौनप्यारा॥गगनसु
न्नामसप्यारामगनं
है॥दिखावेनयनखो
लकरकोकडीहै॥६
॥कडुक्यातुभेशब्दनि
शब्दजागा॥अरखरखो
लकरखयाकजैन्या
गलोगा॥पवकेसोवद
न्नाउघालालीयाहै॥
कियाप्रारोधाजासोह
सोन्नराहै॥७॥त्रिकुट
केनिचटूमोकपटूको
लखोला॥अउठपी
ठकेपीठमोजैउजा
ज्याला॥जहाफुल
सेफुल्लफुलेनुरा
ना॥दियादसोसनि
तपायाकमिना॥८

३

जहाप्रेमसेप्रेमल्यावेपिलावे

जहाफुल्लसेफुल्लमावे
समावे॥जहादिद्दसे
दिदल्यावेदिखावे॥
जहापिवसेपिवल्या
वेदिखावे॥९॥पीरे
कीजहासुरतपाईख
बरकर॥दिवानाकु
साकैंकियादिलू
जमाकर॥जहाचंद्र
सुरीजबिनाकोनपा
वे॥कहेसिद्धअवधु
केमेशासमावे॥१०॥

खडीउन्मनिब्रह्मतालाउजपाला
सोहंनिस्तमोमनपवनपा
रकरना॥ईडापिंगलाकु
सुषुम्नावताना॥उलटू
घाटत्रिकुटमोषडीम
स्तबाला॥११॥उलटूखंड
चौखंडमोखंडउन्नारी॥खं
डीपिंडब्रह्मांडमोकैानप्या
री॥तीनोबंधकाबंधजि
न्नेछुडाया॥सोहंदलक
मलमोजिन्नेपारकिया
॥१२॥त्रिकुटसेत्रूटूमो

अउठपीठजागे॥निकट
ब्रह्मरंध्रिमहाकालजागे
॥ताहाकुंडलीऊर्ध्वमाया
दिखाई॥शशिसूर्जतारा
अनहदसुनाई॥१३॥अग
उघोधोकलाकालबाजे
पवनसे॥घलंघलघुटे
बंधनिबंधवासे॥अ
नाझनझमक्तिबडीता
नगावे॥सलासलसल
क्तिजहापीतपावे॥१४॥

उलटकामकार्चुतमाया
बिराजे॥खडीदेसव्यादे
समोधुमबाजे॥लजी
सिद्धकीप्रीतवेकामिनी
कु॥१५॥लगाईकलाबे
गबेनामिानीकु॥१५॥
जहाचौकआधारसेस्वा
दपाया॥मनीपुरनाजेअ
नुहद्दताया॥बिशुद्धा
कलाबोडशीचंद्रना
वे॥उलटूघाटअंमृत

शु

द्विदलदिखावेतिधा॥
लीयाउर्ध्वबिंदुअमर
सिद्धकीया॥वजुज्ञावसे
ब्रह्मनावजुडाया॥कि
याब्रह्मसघरावजुद्व्या
रध्याने॥अहंतानहिये
केदेखादिवाने॥१७॥
अरैधूसेउरधूकीअज
पालगिहै॥घडीआठ
मोआठसेफेरलगीहै
॥खबरकोदिवानेघ



नीकेलगीहै॥जहानील
सेनीलमोक्योंलगीहै
॥१८॥जहाउर्ध्वकुवादि
खावेपवनकु॥कीयापार
कर्त्तारवैकुंडलोकु॥निकि
गरडडारीकिपासिद्धजीकी
॥जगनसुर्त्तमोकीर्त्तगाई
मगनकीति१॥जिनेचंद्र
सुरजकुमगनमस्तकीया
मपनकरगुरुसंजोतादि
खाया॥उन्हेजन्मकाजन्म
सफलहोकिया॥कहेसि

इन्द्रवधुलुलेफुलदिखा
या॥२०॥वज्रदफुलेन्या
नेफुलेफलदिखाउ॥नि
रंलबदर्योवम्यानेता
उ॥जिवन्यररहेपत्र
वाकोसुनोहै॥कम
लफुलचटैहोदोहा ते
तबताउ॥२१॥अधे
चरनकमलामनो
गंधचरता॥उसिव्र
जन्यगुरुमोपीररहता



उहामूलआधारचौपत्र
फुले॥दुजीस्वाधिष्ठउप
त्रमालामिलाले॥२२॥
तिजिनानिमनपुरदस
पत्रबाला॥अनुहद्दि
खाउबिसुद्धंसेसोला
॥उपरमुकोमलानिचे
हातबाला॥चटैकर
कमलपिंडब्रह्मांडमा
ला॥२३॥उपरनादसो
हंबनेमुलप्रमानो॥

१ कऊनीलसुनीलसमोलनय
नेमो
सोहंफुलबिकाशेनय
नदलकमलमो॥उसे
पत्रसहस्र देखा नयनमो
लगाया ईश कुपिवपा
यामगनमो॥श्वेत येञ्
पंनलाल सेफेद देखा
कमलमो॥ सुना पीत क
बुरनो रंग न्यारी॥फुलफु
लचद्र कर चिदाबसं
हारी॥२५॥गुरु ग्यान
सुमजन पाया छिकाना
१

सहज दल कमलमो न
राहै नुराना॥उहा चक्र सु
र ज्बिना जोत लागी
सोहं दलकमलमो बडी धु
न लागी॥२६॥चहै नाद
सोनादमो प्यारा ग्यारा॥
दिखा उ निल्ला उर्ध सोहं
संह्वारा॥स्वयं जोतमो
जोतपावे हमेशा॥पि
या दिल्ल दिखावे कहे को
नमाषा॥२७॥जहां ला
ष च्यान्ना ष दोनो नजा

९

उस्पारी॥वजुद्राग कि
ताबतोरनूदिवाने॥
कतरेज्यामेहिरसा
नियताने॥१॥वाजी
वलवजुदशरियत
राहाहै॥सेनूकाहाफे
जानतुसोलिखाहे॥
नासुतमजीलजीकी
रताहाजलीहै॥साहा
दुतमुदतमुकामसे
तानहै॥२॥वाजीव

९

लवजुदखाककीपा
केहै॥मुरउम्राबम्रा
तस्यवोबावहै॥जाहा
रबरसानिछेरहेउ
ज्याला॥वजीवलव
जुदजानतुपीरबो
ला॥३॥वाहामनकि
नलवजुदहेदिवाने
॥ताहाईस्कफिलफि
रस्ताकामीने॥लाई
लाहाबकारीऊलके

म्काने॥मैनोगईजि
लकिताबेनजाने॥३॥
धकतरेजानजमाली
यत्साचेकेउरे॥शरी
खतराहानेकसेचा
लेबारे॥हारफुसीने
कामारकलबीबिचा
राखुदीघोडकरदेख
दिलनोबिचारा॥५॥
बिच्यारोखुदाम्राब
म्रातसपवन्मो॥द



पंजपरवेसमायाप
वन्मो॥पवन्नपारस्नो
जाहाजोतलागी॥३॥
कोहेसिहम्रवधुद्दिला
जिद्दलागी॥६॥तन्बे
जम्याने फुलानापीरो
कु॥चचयानहिकया
करेगाकेदकु॥लिया
दस्तपंज्यापियालील
दाना॥कोहेसिहम्रव
धुत्तहमेशासमाना

॥७॥ वजुद च्यारको दे
खवि[illegible] च्यारनाई॥प
चलखपेठमो देखव
जुदसमाई॥रोनमा
रफतमोसोहं सोनगी
ना॥कहे सिद्ध अवधु
त ऐनमो दिखाना॥८॥
सुन हो सिद्धा निहच
लबानी॥करो कृपा हं
बस्तपह ब्चानी॥अ



उठपीठपर लागो
ध्यान॥उनमनि मठपै
ठ निदान॥९॥काम
क्रोधको मारो बिर॥
तन मन है पह च्या
नो पीर॥त्रिकुट ठिका
ने करो संधानु॥उनम
नि मठ मो पैठ निदान
॥१॥दया सिद्धा ये क
हिय द्वार॥माया विद्या
ये संसार॥चुके मर
न सोली जै ध्यान॥

उन्मनि मठ मो पैठ नि
दान ॥३॥ साचे वस्तकु
य्रा चन पावे ॥ जीमी
नऋसमान येन्पाय दि
खावे ॥ शुद्ध ना जाने
किस्की कौन ॥ उन्म
नि मठ मो पैठ नि दा
न ॥४॥ ईडा पिंगला
उपरल्पावो ॥ चंद्र सु
रज कु मन्पान दिखा
वो ॥ ब्रह्म रंध्र कु उर



सुजान ॥ उन्मनि मठ
मो पैठ निदान ॥५॥
जो गजु गुल्काल लेवा
नेख ॥ निस्तम कोने
बोले ऋलेख ॥ ब्रह्म
खपर मोति रना जा
न ॥ उन्मनि मठ मो पै
ठ निदान ॥६॥ अले
ख मुद्रा साचि दारवा उ
॥ तीन तोऊं को देखस
माउ ॥ अजंमऋ जीच
रने ख समान ॥ उन्म

निमठमोपैठ निदान ॥७॥ नयनसैंनकुदे खदिखावे॥ पलखऋ लख कीखबर न पावे॥ पंचरंगकुलाजी लगन॥ उन्मनिमठ मोपैठनिदान॥८॥ अनहदबाजे कीबाजे घाई॥ नादकीसुधनाद नेपाई॥ ऐसीमुद्रा डारोकोन॥ उन्मनि



मठमोपैठनिदान ॥९॥ मालामुद्रासहे लीकंथा॥ सोहंस्वरूप सुनोपुता॥ कहेसिह अवधुत्बस्तपछान ॥ उन्मनिमठमोपैठ निदान॥१०॥ इति श्री मत्पंचिकर्णसंपूर्ण श्रीपूर्णपुरुषायनमः ॥ब्रह्मांडदंधकारं॥प मपतिमिरंयोतिषोरस

१४

पमस्तिचागेनज्योतिस्व
रूपा॥परमपुरुनतुलं
मंडलंचार्बरवंडं॥स्व
स्थानंनित्यंपदं॥तत
त्रिपदंविलसितंना
द्यमेकंसमायं॥मध्य
स्थंपारन्तकेपदमुप
रितोजातिपूर्णाविः
तियं॥१॥विमलत
रसवेशोवेष्ठितःपा

१४

रन्तके॥रतिललित
सुन्नाउैः सर्वदाद्वंद
युक्तै॥प्रचुरविमुद्ध
कांतिनित्यशस्तेजसां
गः॥परमपुरुषपूर्णो
पातुवःस्वःप्रकाशः॥२
॥वंदेनिजसरिननित्य
ल्लितांतरस्थं॥सरवा
वैवंदेचान्तरेचांतरे
षु॥सःपरमधामंप

परिपूर्णमेकं।।सखा
सखिंचपूर्णपुरुषाव
तस्य।।३।।सयोगाग
तंम्नत्यलोकस्यन
मात्।।स्वप्न्नासिव
तक्रीडीतंस्वस्वलितां
पुनस्तदेवोनिजरूप
जानाति।।सदाखंड
लितंनिजप्राप्यं
तिः।।४।।वापिकूपत
डागादितिर्थंजिरीज



रोभुजत।।नद्यानांसागर
स्योयजः जलंप्राप्तबुधे।।
महापदेपरंसाक्षात्शुधा
वत।।फलमाप्नोतिपूर्ण
रुपप्रसादतः।।५।।इति
श्रीपूर्णपुरुषमहापद
स्यपंचरत्नसंपूर्णं।।।।
ॐनमोआदेशगुरुकुं।।ई
स्वरमहादेवहाकै।।देवीपा
र्वतीपुकै।।हनमकेडकावा
यजोला।।वायगरुमपके
फुटेपीडंकरै।।ईश्वरीके
पायरवालीडोलः।।१२८।।

एकसो अठाईसबार पढै।।
शनिवारको अर्धरात्रीको
पढै।।२।। अठाईरटे किमु
दीघडा व रा।। साडे अक्षा
मासकी तांदुल पसो न्नाः
रस क १ उदक्रि धूप दे रा।।
तांदुल आपरा रखरा।। औ
र कीसी को न दे रा।। ए जंत्र

मंत्र:

ॐ हरा मंत्र बीर बंधेज मंहु
मारै।। फाटै धरती आकास
चिंघाडै।। माथ फुल कवल
काधरै।। भरी बाचा कदीन
टलै।। अंध कुवा पाताल ज
ल।। अघोरी मसाण।। कीस
बदनि वाल: उसनै पकडी
कौन।। कान कुकर बाचा दइ
।। जोर रव तेरी आंन।। नोना
चमारी।। बीरव की बिसबी
रैवन मारी।। बांध बीजरा
रवपाट।। गाज बीज की के

रुचोट॥दे ट्टे धूप चंद्रमा
ओट॥अर्प च रुसूर्य बा
चा दे बै॥हरि चरों जीमेरे
पास॥गुरु है मेराजोगी
दास॥ल [illegible] डे लडावे चरी
करावे॥बमाथे मन सारा खि
लावे॥तल बंधु तल वार
बंधु॥बंधु संख चतुर॥
नौ महिने का बंधन राखे
जती हराम तबीर॥मेरी
नकरु गुरु की शक्ति पुरा न
वई श्वरी वाचा॥१॥॥॥